

# क्यासानूर फॉरेस्ट डिज़ीज़/ मंकी फीवर

राहुल कुमार<sup>1</sup>, मृणालिनी रामटेके<sup>2</sup> और दीपक कुमार पंकज<sup>3</sup>

<sup>1,2</sup> पशुचिकित्सा विभाग नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर-482001

<sup>3</sup> पीएच.डी. स्कॉलर, पैथोलॉजी प्रभाग, आईसीएआर-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर बरेली उ.प्र., 243122

<https://doi.org/10.5281/zenodo.10546998>

क्यासानूर फॉरेस्ट डिज़ीज़ (Kyasaur forest disease) एक टिक-जनित वायरल रक्तस्रावी बुखार है, जो क्यासानूर फॉरेस्ट डिज़ीज़ वायरस के कारण होता है, जो एक संक्रमित टिक हेमाफिसैलिस स्पिनिगेरा के काटने से फैलता है। केएफडी का नाम इसके स्थान, भारत में कर्नाटक के शिमोगा जिले के क्यासानूर वन क्षेत्र के नाम पर रखा गया है। केएफडी की चिकित्सकीय विशेषता बुखार, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, भूख न लगना, नींद न आना और थकान, धड़कन कम होना और रक्तचाप कम होना, और कम आवाज में खांसी और असामान्य रूप से पेट में दर्द होते हैं।

## संक्षिप्त इतिहास

1957 में, कर्नाटक के शिमोगा जिले के क्यासानूर जंगल में कई मृत बंदर देखे गए थे और साथ ही क्षेत्र के कुछ ग्रामीणों में गंभीर थकान सुस्ती थकावट थकावट जैसे लक्षणों वाली बीमारी भी थी।

## रोगकारक

क्यासानूर फॉरेस्ट डिज़ीज़ वायरस (केएफडीवी) के कारण होता है। यह वायरस जीनस फ्लेविवायरस, परिवार फ्लेविविरिडे से संबंधित है।

## ट्रांसमिशन

किसी संक्रमित जानवर के संपर्क में आने से, जैसे बीमार/हाल ही में मृत बंदर। संक्रमित टिक अप्सरा (हेमाफिसैलिस स्पिनिगेरा) के काटने से। वयस्क हेमाफिसैलिस स्पिनिगेरा टिक बड़े जंगली या घरेलू जानवरों को खाते हैं, और फिर जमीन पर गिर जाते हैं। लार्वा और निम्फ़ खुद को मनुष्यों, जंगल के विभिन्न छोटे स्तनधारियों, साथ ही पक्षियों और बंदरों से जोड़ते हैं और वायरस फैलाते हैं **बंदरों में रोग**

दक्षिण भारतीय मकाक (मकाका रेडियोटा) के केएफडी संक्रमण से दस्त, मंदनाड़ी, हाइपोटेशन विकसित होता है और अंततः मृत्यु हो जाती है।



## मनुष्य में रोग

- क्यासानूर फॉरेस्ट डिज़ीज़ में तेज बुखार, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, भूख न लगना और नींद न आना होता है।
- तीसरे या चौथे दिन, मरीज को दस्त और उल्टी की समस्या होती है।
- गंभीर थकान और तालु पर पैपुलोवेसिकुलर घाव लगातार पाए जाते हैं।
- ब्रेडीकार्डिया और हाइपोटेंशन प्रमुख लक्षण होते हैं।
- असामान्य रूप से खांसी और पेट में दर्द के लक्षण होते हैं।
- बुखार 6 से 11 दिनों तक रहता है। एक बुखारी अवधि के बाद, रोगियों का एक बड़ा हिस्सा दूसरे चरण के लिए जाता है जो आमतौर पर गर्दन की कठोरता, मानसिक उलझन, कंपन और असामान्य रिफ्लेक्स के जैसे न्यूरोलॉजिक लक्षणों के साथ 2 से 12 दिनों तक रहता है।
- गरीब और कुपोषित कृषि कार्मिकों में हेमोरेजिक लक्षण।
- ल्यूकोपेनिया सामान्य होती है। मृत्यु से पहले एक छोटा हिस्सा मरीज को कोमा या ब्रॉकोप्रेयोनिया का विकार देता है। मामलों की मृत्यु दर लगभग 5% से 10% होती है।

## उपचार

- क्यासानूर फॉरेस्ट डिज़ीज़ का कोई विशेष इलाज नहीं है।
- सहायक थेरेपी और नैदानिक प्रबंधन महत्वपूर्ण हैं, जिसमें तरलता के बनाए रखना और रक्तस्राव विकारों से बचाना शामिल है।

## रोकथाम और नियंत्रण

- टिक्स के खिलाफ व्यक्तिगत मानव सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण है, जैसे सुरक्षात्मक कपड़े और रिपेलेंट्स का उपयोग।
- केएफडी हेतु फॉर्मिलिन इनएक्टिवेटेड केएफडीवी वैक्सीन मौजूद है जिसका उपयोग भारत के स्थानिक क्षेत्रों में किया जाता है।
- केएफडी प्रचलित क्षेत्रों में टिक नियंत्रण उपायों का पालन किया जाना चाहिए।

